NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D. - 19

हिन्दी दलित साहित्य का विकास

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

हिन्दी दलित साहित्य का विकास

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-4

S.No. *Chapterwise Reference Book* *Page*

हिन्दी दलित कविता

1. समकालीन दलित कविता का विकास 1
2. 'घृणा तुम्हें मार सकती है' और 'सच यही है' जाति व्यवस्था को बदलने का संकल्प 8
3. 'तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?' और 'चुनौती' : समता की सृजनात्मक पहल 15
4. 'जनपथ' और 'अभिलाषा' प्रतिरोध के मुखर स्वर 22
5. 'सुनो ब्राह्मण' और 'विद्रोहिणी' : विषमतावादी मूल्यों से विद्रोह 29
6. 'आज का रैदास' और 'द्रोणाचार्य सुनें : उनकी परंपराएं सुनें' विद्रोह की परंपरा का सृजनात्मक विकास 37

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

हिन्दी दलित कहानी–I

7. दलित कहानी की विशिष्टता, कथावस्तु : सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकार 44

8. 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' : ओमप्रकाश वाल्मीकि 52

9. 'आवाजें' : मोहनदास नैमिशराय 58

10. 'आमने-सामने' : विपिन बिहारी 64

11. 'परिवर्तन की बात' : सूरजपाल चौहान 70

हिन्दी दलित कहानी–II

12. 'लटकी हुई शर्त' : प्रह्लादचंद्र दास 75

13. 'वैतरणी' : नीरा परमार 80

14. 'सुमंगली' : कावेरी 86

15. 'अंगारा' : डॉ. कुसुम मेघवाल 92

हिन्दी दलित आत्मकथन

16. दलित आत्मकथा की विशेषता : 97
'सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के दस्तावेज'

17. 'जूठन' : आत्मानुभूति की मर्मांतक अनुभूति 109

18. 'जूठन' : अवमानना और बहिष्कार के दंश 122

19. अपने-अपने पिंजरे-1 135

20. अपने-अपने पिंजरे-2 144

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिन्दी दलित साहित्य का विकास

M.H.D.-19

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) चाहे संकीर्ण कहो या पूर्वाग्रही
मैं जिस टीस को बरसों बरस
सहता रहा हूँ
अपनी त्वचा पर
सूई की चुभन जैसे
उसका स्वाद एक बार चखकर देखो
हिल जाएगा पाँव तले जमीन का टुकड़ा।

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने समाज में दलित वर्ग की उस पीड़ा का वर्णन किया है, जिसका दर्द केवल वही जान सकते हैं, क्योंकि उन्होंने उसे भोगा है। दलित हमेशा से उच्च वर्ग के शोषण का शिकार बनता आया है, इसलिए उच्च वर्ग के लोग या शासन उनकी पीड़ा को समझ नहीं सकता। इसी शोषण ने उनकी मानसिकता को संकीर्ण बना दिया है। इसी का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

व्याख्या–समाज के तथाकथित उच्च वर्ग के शोषण को दलित सदियों से सहते आए हैं। उन्हें हमेशा दबाया और कुचला गया है। दलित वर्ग की घृणा, उसका आक्रोश ऐसे ही नहीं पनपा। दलित वर्ग की मानसिकता को समाज आज संकीर्णता एवं पूर्वाग्रह का नाम दे रहा है, लेकिन दलित वही व्यक्त कर रहा है, जो उसने भोगा है। वह उस शोषण की टीस को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सहता आ रहा है, वह टीस उनके दिलों में सुई की चुभन जैसा दर्द देती है। उसने तन पर ही नहीं मन पर भी घाव खाए हैं और झूठी सहानुभूति या उपदेश उस पर मरहम नहीं लगा सकते। उस पीड़ा और अत्याचार को एक बार उपदेश देने वाले दलित वर्ग की मानसिकता को संकीर्ण और पूर्वाग्रह से ग्रस्त कहने वालों एक बार सहकर देखो। तुम्हें उस पीड़ा, अत्याचार और शोषण की गहराई का अनुभव होगा। तुम यह सोचकर हैरान हो जाओगे कि इस पीड़ा को दलित सदियों से कैसे बर्दाश्त करते चले आ रहे हैं।

विशेष–1. जातिगत भेदभाव और शोषण की अभिव्यक्ति है।
2. भाषा बोलचाल की है, किंतु व्यंग्यात्मक है।
3. गद्यात्मक काव्य है।

(ख) 'सुनो भूदेव'
तुम्हारा कद
उसी दिन घट गया था
जिस दिन कि तुमने
न्याय के नाम पर
जीवन को चौखटों में कस
कसाई बाड़ा बना दिया था।

उत्तर–प्रसंग–कविता 'सुनो ब्राह्मण' में कवि मलखान सिंह ने असमानता पर उँगली उठाई है। कवि ब्राह्मणवादी व्यवस्था से घृणा करता है तथा कहता है कि यह नरक-स्वर्ग सिर्फ एक अंधविश्वास है तथा पुनर्जन्म का जाल जाति व्यवस्था को फैलाए रखने के लिए बनाया गया है।

कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस कविता ने केवल ब्राह्मणवादी व्यवस्था को गलत नहीं बताया, उन्होंने आरोप लगाया है कि सवर्ण समाज संसाधनों पर अपना एकाधिकार बनाए रखना चाहता है। दलित को तुच्छ बताकर उन्हें संसाधनों से वंचित रखा जाता है तथा स्वयं वे इसका सुख भोगते हैं। यह निम्न वर्ग खेतों में अनाज उगाता है, कुएं खोदता है, देवालय बनाता है और बाद में इन्हें इन सब से दूर कर दिया जाता है। कवि स्पष्ट करता है कि यह केवल उच्च जाति की एक चाल है, वह धर्म और अध्यात्म के ढोंग पर दलित का विकास नहीं करने देते, ताकि आर्थिक व्यवस्था में इसे समुदाय से कोई खतरा न हो। इसे कवि ने अपनी कविता 'ब्राह्मण सुनो' में ब्राह्मण ग्रंथों के मूल्यों से इंकार किया है।

व्याख्या–कवि ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद को चुनौती देते हुए कह रहा है कि अपने आपको भूदेव अर्थात धरती का शासक समझने वाले ब्राह्मणों तुम्हारा सम्मान तो उसी दिन घट गया था जब तुमने अपने स्वार्थ के लिए न्याय के नाम पर समाज को वर्ण और

जाति व्यवस्था में बांटा और समाज के कमजोर वर्गों को परंपराओं की बेड़ियों में बांधकर उन पर अत्याचार करने लगे थे। तुमने जीवन को कसाई बाड़े की तरह बना दिया था, जहां निरीह प्राणियों का जीवन कसाई के हाथों में होता है, जिसे वह जब चाहे खत्म कर देता है।

विशेष–1. भाषा बोलचाल की तथा अर्थबोध को व्यक्त करने वाली है।

2. मुक्तक छंद का प्रभाव है।

3. कमजोर वर्ग को समाज की परंपराओं को चुनौती देते हुए दिखाया गया है।

(ग) चलती रही
निश्चित परिपाटी पर
बैसाखियों के सहारे
कितने पड़ाव आये!
आज जीवन के चढ़ाव पर
बैसाखियां चरमराती हैं
अधिक बोध से
अकुलाकर
विस्फुटित मन हुँकारता है
बैसाखियों को तोड़ दूँ!!

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत पद्यांश सुशीला टाकभौरे की कविता 'विद्रोहिणी' कविता से उद्‌धृत है। यह कविता दासी बनाकर परंपराओं की बेडियों में जकड़ी स्त्री के विद्रोह की कविता है। स्त्री अब इन परंपराओं को तोड़कर स्वतंत्र होना चाहती है। बंधनों एवं परंपराओं के बोझ से स्त्री इतना दब चुकी है कि वह सब तोड़कर पुरुष की अधीनता से मुक्त होना चाहती है।

व्याख्या–परंपराओं की बेड़ियों में जकड़ी दबी-कुचली और आक्रोशित स्त्री पुरुष समाज को चुनौती देते हुए कह रही है कि मैं आज तक तुम्हारी दिखाई परिपाटी पर चलती रही, तुम्हारे आदेशों का पालन करती रही। जीवन के हर मोड़ पर अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं को कुचल दिया, किन्तु अब यह पराधीनता का बोझ सहा नहीं जाता। ब यह परंपराओं की बैसखियां चरमराने लगी है। रूढ़ियों का अधिक बोझ मन-आत्मा को बेचैन करके विस्फोट के साथ हुंकार करना और इन बंधनों को तोड़ देना चाहता है।

विशेष–1. भाषा बोलचाल की है।

2. बिंबों एवं प्रतीकां का प्रयोग सामाजिक रूढ़ियों पर व्यंग्य करता है।

3. स्त्री की दशा का यथार्थ अंकन है।

(घ) घर-घर में सूनी आँखों से
एक-एक औरत
घर से बाहर गए
अपने-अपने आदमी के
लौटने का इंतजार करती है
सच यही है
वे कतरा-करता होकर
जीती हैं
और कतरा-कतरना होकर
मरती हैं।

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहनदास नैमिशराय की कविता 'सच यही है' से ली गई हैं। वैसे तो दलित साहित्य दलित उत्पीड़न और शोषण की कहानी दर्शाता है, किंतु नैमिशराय जी की यह कविता साम्प्रदायिकता पर केन्द्रित है। उनका मानना है कि साम्प्रदायिकता के सबसे अधिक शिकार स्त्री और दलित ही होते हैं, क्योंकि दंगा कराने वालों की पहुँच इन तक आसान होती है। मोहनदास नैमिशराय प्रसिद्ध दलित साहित्यकारों में से एक है।

व्याख्या–'सच यही है' कविता में नैमिशराय जी ने साम्प्रदायिकता की समस्या पर प्रकाश डाला है। साम्प्रदायिकता उस समाज का एक रोग है, जिस समाज का हिस्सा दलित भी है। साम्प्रदायिकता एक ऐसा रोग है, जिसमें बेकसूर लोग बलि चढ़ते हैं। कवि अपनी कविता में बताता है कि किस प्रकार घर में बैठी महिलाएँ अपने आदमियों के आने का इंतजार करती हैं, किंतु उन्हें डर भी रहता कि आज उनका आदमी लौटेगा या नहीं। यह भय उनकी जिंदगी का हिस्सा बना रहता है। क्योंकि अक्सर शहर में साम्प्रदायिक दंगे होते रहते हैं और उनमें ऐसे कमजोर, असहाय दलित वर्ग की बलि चढ़ती है। अपनी आंखों में ऐसे ही डर को संजोए दलित स्त्री अपने आदमी का इंतजार करती है। कवि ने पंक्तियों में सूजी हुई आंखों के विषय में बताकर उस औरत की पूरी जिंदगी से अवगत करवा दिया है। अर्थात आंखों में गहरा खौफ भरा हुआ है। इसलिए वह अपनी जिंदगी डर-डर कर गुजारती है।

प्रस्तुत पंक्तियों में उस लुटी-पिटी औरत का जिक्र किया गया है, जो अपने घर पर बैठी अपने आदमी के आने की राह देख रही है, किंतु उसे नहीं पता कि शायद उसकी यह प्रतीक्षा खत्म ही नहीं होगी। दंगे उनके आदमियों को खा चुके हैं और बाहर प्रशासन उनकी सुरक्षा का ढोंग रचता है। कवि ने कविता में इस बात पर भी जोर दिया है कि हत्यारा हम सबमें कहीं-न-कहीं बैठा है और किसी-न-किसी रूप में वह इंसानियत की मौत कर देता है। एक

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

हिन्दी दलित साहित्य का विकास

हिन्दी दलित कविता

समकालीन दलित कविता का विकास

1

परिचय

दलितों ने समाज में कदम-कदम पर अपमान, घृणा और वर्ण संबंधी त्रासदी को झेला है। दलित साहित्यकारों ने दलितों की दर्दभरी व्यथा को अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है। दलित साहित्य का मूल उद्देश्य है–अपने साहित्य के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना। वे अपनी सार्थक अभिव्यक्ति के द्वारा परिवर्तनकारी चेतना का विकास करना चाहते हैं तथा समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण, असमानता तथा अमानवीय व्यवहार को समूल नष्ट करना चाहते हैं। वे दलितों के हृदय में दबे दर्द को कविता के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हैं। दलित आत्मकथाएं रचनाकारों के अपने दुखभरे अनुभव रहे हैं, जिन्हें उन्होंने साहित्य रूप में सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है। दलित कवि परंपरागत बेड़ियों को तोड़कर नये समाज के निर्माण के लिए संघर्ष करते रहे हैं। पिछले लगभग 30-40 वर्षों में दलित रचनाकारों की एक पीढ़ी तैयार हुई है, जो अपने समाज की पीड़ा व दर्द को व्यक्त करती आ रही है।

अध्याय का विहंगावलोकन

समकालीन दलित कविता का विकास

आजादी के पश्चात भारत एक जनतांत्रिक गणराज्य बना, जिसमें संविधान के अनुसार छुआछूत, लिंग, वंश, धर्म, जाति, भाषा के आधार पर सभी नागरिकों को समान अधिकार दिये गए, किंतु आजादी के इतने समय के बाद भी ये बुराइयाँ समाज में अभी भी विद्यमान हैं। हालांकि छुआछूत या जाति के आधार पर भेदभाव किये जाने पर, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति अधिनियम, 1989 के अंतर्गत दण्ड का प्रावधान है। डॉ. भीमराव अंबेडकर, जो संविधान निर्माण समिति के अध्यक्ष तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री थे, उनका यह बड़ा स्वप्न था कि देश में समतावादी व्यवस्था कायम हो सके। हजारों वर्षों से चली आ रही छुआछूत की प्रथा को जड़ से खत्म करने के लिए संविधान में इसके विरुद्ध प्रावधान रखे गए हैं, किंतु फिर भी समाज में विषमता व्याप्त है। इससे केवल मनुष्य के सम्मान, पहचान या गरिमा का अवमूल्य नहीं होता, बल्कि इससे मनुष्य को राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा शैक्षिक क्षेत्र में भी तिरस्कृत और बहिष्कृत किया जाता है। धर्म तथा जाति के आधार पर समाज के एक बड़े वर्ग के कारण श्रमजीवी वर्ग मुख्यधारा से बहिष्कृत ही रहता है। खुलेआम इनके मानवाधिकारों का उल्लंघन किया जाता है। आज भी दलित हमारे समाज में प्रताड़ित होते हैं। उनका शोषण किया जाता है, उन पर अत्याचार किये जाते हैं। संविधान में स्वतंत्रता तथा समानता का प्रावधान होने के बावजूद भी दलित समाज को जातिगत आधार पर परंपरागत व्यवसाय करने की मजबूरी से आजादी नहीं मिली है। आज भी सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थानों पर उनका प्रवेश वर्जित है। उत्पादन के क्षेत्र में वे केवल बंधुआ मजदूर बनकर ही रह गए हैं। यही कारण है कि दलित आर्थिक रूप से पिछड़े, उपेक्षित व वंचित रहते हैं। आजादी के बाद देश का तो विकास हुआ, किंतु दलित वर्ग इस विकास से वंचित ही रहा। उनकी बस्तियों में बुनियादी सुविधाएं भी नहीं पहुँच पातीं।

नीरा परमार की कहानी 'वैतरणी' के अनुसार भेदभाव की पीड़ादायी परंपरा जो आज भी चली आ रही है, का खुलासा करती है। उन्होंने कहानी के माध्यम से बताया है कि किस प्रकार सवर्ण जाति के लोग समाज में अपना अधिकार बनाए रखते हैं, जिसके कारण दलित लोगों को स्वच्छ पीने का पानी तक नहीं मिल पाता। आज वर्तमान युग में भी जाति की अहंकारी सोच का बोलबाला है, जो राजनीतिक भ्रष्टाचार को भी जन्म देती है। डॉ. अंबेडकर ने जाति-व्यवस्था की अमानवीयता को अपनी किताब 'जातिभेद के उच्छेद' में प्रस्तुत किया है। चातुर्वर्ण्य की इस अधम व्यवस्था के कारण तथाकथित निम्न वर्ग अपना विकास करने में असफल रहा। उन्हें न तो शिक्षा पाने का अधिकार था और न ही अपने लिए कोई मुक्ति का मार्ग पाने का कोई साधन था, जिसके कारण वे शोषण के शिकार बनते रहे। वर्ण-जाति व्यवस्था का इतिहास तीन हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। इस व्यवस्था ने दलितों को बहिष्कृत बस्तियों में रहने के लिए बाध्य किया। भारत में जाति के नाम पर इस प्रकार के भेदभाव ने यहाँ की स्वाधीनता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने 20 दिसम्बर, 1927 को छुआछूत के विरुद्ध एक विशाल आंदोलन किया, जिसमें हजारों की संख्या में दलित स्त्री-पुरुषों ने उसमें भाग लेकर उनका साथ दिया। इसके पश्चात 25 दिसंबर, 1927 को अस्पृश्यता का विरोध करने के लिए हिंदू धर्मग्रन्थ मनस्मृति को जला दिया गया। सनातनी धर्मावलंबियों ने हिंसात्मक हमलों द्वारा दलितों के संघर्ष को रोकने के बहुत प्रयास किये, किंतु दलित अपनी बरसों से पड़ी बेड़ियों को तोड़ने के लिए सजग हो चुके थे और उन्होंने स्वयं को सामाजिक दासता से आजाद कराने के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रयासों को जारी रखा।

दलित साहित्य आंदोलन की पृष्ठभूमि

परंपरा और स्वरूप

डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए 1945 में मुंबई (बम्बई) में पीपुल्स एज्युकेशन सोसाइटी स्थापित की, जिसके अंतर्गत उन्होंने मुंबई के सिद्धार्थ कॉलेज तथा औरंगाबाद के मिलिंद कॉलेज की स्थापना की। डॉ. अंबेडकर की मृत्यु के पश्चात दलित साहित्य की बागडोर इन्हीं दो कॉलेजों के दलित युवकों ने संभाली। 'सिद्धार्थ साहित्य संघ' की स्थापना सन 1956 में की गई थी, जिसका नाम बाद में बदलकर 'महाराष्ट्र दलित साहित्य संघ' रखा गया। इसने दलित साहित्य को नई दिशा प्रदान की तथा दलित रचनाएं बहुत-से समाचारपत्रों व पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी। दलित रचनाकारों ने दलित जीवन की त्रासदी की वास्तविकता को चित्रित करना ही अपना लक्ष्य माना। मराठी ललित साहित्य केवल अभिजात्य वर्ग के मनोरंजन तथा कल्पना विलास को ही दर्शाता रहा, उसमें शोषित-वंचित वर्ग तथा त्रासदी भरे जीवन की कोई छाया भी नहीं होती थी। साहित्य पर सौंदर्य, कल्पना तथा रंग-विलास का आवरण चढ़ा रहा। दलितों की व्यथा तथा पीड़ा का इसमें कोई स्थान नहीं था तथा इस सबके लिए मुख्यधारा के वर्ग को जिम्मेदार माना गया। इसी संदर्भ में दलित लेखकों का पहला सम्मेलन 2 मार्च, 1958 को मोरबाग में दादर मुंबई के बंगाली हाई स्कूल में आयोजित किया गया, जिसके अंतर्गत 'दलित साहित्य की दृष्टि' पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य दलित लेखकों को प्रेरित करना था, जिससे वे दलित साहित्य का प्रचार-प्रसार गाँव-गाँव तक कर सकें। इस सम्मेलन में इस बात की मांग की गई कि मराठी साहित्य की एक धारा के रूप में दलित साहित्य को मान्यता देकर सम्मानित किया जाए। इसके अलावा विभिन्न साहित्य संघ और विश्वविद्यालयों, पाठ्यक्रमों में दलित साहित्य रचनाओं को भी सम्मिलित किया जाए। इस सम्मेलन से दलित साहित्य आंदोलन की सही तस्वीर सामने आयी। इस सम्मेलन में शामिल होने वाले प्रमुख लेखक और आलोचक सभी रिपब्लिकन पार्टी से संबंधित थे या उसके कार्यकर्त्ता थे। डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के देहावसान के पश्चात रिपब्लिकन पार्टी का विभाजन हो गया, जिसके परिणामस्वरूप 'महाराष्ट्र दलित साहित्य संघ' भी दो भागों में बंट गया, जो 'महाराष्ट्र बौद्ध परिषद' तथा 'महाराष्ट्र बौद्ध साहित्य सभा' बने। इन दोनों साहित्यिक संस्थाओं का दलित साहित्य को प्रोत्साहन देने में बड़ा हाथ रहा। दलित जीवन को चित्रित करने वाले प्रमुख लेखक थे अण्णाभाऊ साठे, शंकरराव खरात और बाबूराव बागुल। बाबूराव बागुल की कहानियों में दलितों का दुख, पीड़ा, वेदना के साथ-साथ समाज में व्याप्त विषमता की भी पूरी झलक दिखाई देती थी। उनकी कविताओं का एक संकलन जिसका शीर्षक था 'विद्रोहाच्या कविता' इसी समय में प्रकाशित हुआ था। इस संकलन की प्रतियाँ प्रिंटिग प्रेस में न छपकर सायक्लोस्टाइल द्वारा छपी थी। दलितों ने जो अस्पृश्यता की आग को सहा, उसकी अभिव्यक्ति दलित साहित्य में देखने को मिली। 'बाबूराव बागुल' के 'जेंव्हा मी जात चोरली' (जब मैंने जाति छुपाई) नामक कहानी संग्रह ने मराठी साहित्य को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया। ये पहले लेखक थे जिन्होंने दलित जीवन की पीड़ा, विवशता व अपमान को इस प्रकार कहानी-कविता में उतारा था। मराठी समीक्षकों ने इस कहानी संग्रह को काफी सराहा था। इस समय तक औरंगाबाद शहर दलित साहित्य आंदोलन का केंद्र बन चुका था।

डॉ. अंबेडकर ने औरंगाबाद में मिलिंद महाविद्यालय की स्थापना की, जिसमें महाराष्ट्र के कोने-कोने से दलित विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। यहीं पर 'नागसेनवन' में स्थित 'मिलिंद महाविद्यालय' तथा 'औरंगाबाद' दलित साहित्य आंदोलन के मुख्य केंद्र बन गए। यह दलित साहित्य आंदोलन का केन्द्र बन चुका था, क्योंकि दलित युवक जो यहाँ पढ़ने आते थे, वे अपने साहित्य में दलित मन की व्यथा को शब्दों के सहारे से उतार देते थे। किंतु इसे प्रकाशित करने की समस्या थी। इसलिए सन 1967 में 'मिलिंद साहित्य सभा' की स्थापना की गई, जिसके अंतर्गत 'अस्मिता' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया गया। विश्वभर में क्रांति के क्षेत्र में साहित्य की भूमिका प्रमुख रही है। लोगों ने साहित्य के माध्यम से जनता को प्रेरित किया है। रूस की क्रांति, बंगलादेश का मुक्ति संग्राम आदि इसके उदाहरण हैं।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भी साहित्य की भूमिका प्रमुख रही। साहित्य के महत्त्व को समझकर ही पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'प्रगतिशील लेखक संघ' के इलाहाबाद अधिवेशन में एक भाषण में आने वाली क्रांति के लिए लेखकों का आह्वान किया। साहित्य लोगों के दिल में उतर कर आत्मा को झकझोर देता है। दलित साहित्य भी दलितों को समानता, स्वाधीनता तथा न्याय दिलाने का मार्ग बना रहा था। डॉ. अम्बेडकर ने इसके महत्त्व और भूमिका के विषय में बताया है। उन्होंने कहा कि जो जीवन-मूल्य और सांस्कृतिक मूल्यों का हनन हो रहा है, उनके लिए दलित साहित्यकारों को जागरूक हो जाना चाहिए। उनका कहना था कि अपने साहित्य की रोशनी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

गाँवों तक फैलाओ, जहाँ अंधकार छाया हुआ है। डॉ. अंबेडकर ने साहित्य की क्रांतिकारी भूमिका को पहचाना तथा इसके लिए लेखक वर्ग को क्रांति का वाहक बनने के लिए प्रेरित किया। दलित साहित्य को प्रोत्साहन देने में त्रैमासिक पत्रिका 'अस्मितादर्श' का बड़ा हाथ रहा है। मार्क्सवादी लेखकों तथा समीक्षकों ने भी दलित साहित्य के विकास में अहम भूमिका निभाई। इस पत्रिका के माध्यम से दलित लेखकों को नया मंच मिला। इसमें लिखने वाले प्रमुख लेखक थे–बाबूराव बागुल, दया पवार, अर्जुन डांगले, आदि। 'अस्मितादर्श' ने साहित्यिक तथा सामाजिक दोनों दायित्वों का निर्वाह किया। दलित साहित्य के विकास में मार्क्सवादी लेखकों व समीक्षकों का भी काफी योगदान रहा है। इस साहित्यिक आंदोलन के प्रमुख केन्द्र नागपुर, मुंबई, औरंगाबाद और नासिक थे। 'महाराष्ट्र बौद्ध साहित्य सभा' द्वारा आयोजित सम्मेलन में दलित कविताओं के प्रथम संकलन 'आकार' का प्रकाशन हुआ था। मराठी दलित साहित्य को मराठी समीक्षकों ने बहुत सराहा, किंतु कुछ परंपरागत समीक्षकों ने इस साहित्यधारा का विरोध भी किया। उनका दृष्टिकोण पूर्वाग्रही होने के कारण उन्हें दलित साहित्य में मूल्यों की कमी लगी तथा वह उन्हें प्रचारात्मक लगने लगा। सन 1968 के पश्चात दलित लेखकों ने साहित्य आलोचना के जीवनवादी दृष्टिकोण को विकसित किया। इसी समय पर दलित लेखकों व कवियों के प्रयास से 'विद्रोह' नामक अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया गया। इसमें मुख्य रूप से दया पवार, केशव मेश्राम, नामदेव ढसाळ, उषाकांत रणधीर आदि कवियों की रचनाओं को शामिल किया गया। सन 1969 में दैनिक समाचारपत्र 'मराठवाड़ा' के दीपावली विशेषांक के उपलक्ष्य में दलित साहित्य पर परिचर्चा आयोजित की गई थी। इस परिचर्चा में डॉ. म.ना. वानखड़े, दया पवार, बाबूराव बागुल, आदि दलित रचनाकारों और समीक्षकों ने भाग लिया तथा इन सभी ने मराठी साहित्य परंपराओं को नकारा। इससे दलित साहित्य का विद्रोहात्मक रूप सामने आया।

सन 1969 में दलित साहित्य का दूसरा सम्मेलन 'महाड़' में हुआ। इसी स्थान से डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने चवदार जलाशय का जल छूकर दलित मुक्ति आंदोलन शुरू किया था। दलित साहित्य सम्मेलनों ने दलित साहित्यकारों में जोश भर दिया तथा उन्हें नई प्रेरणा दी। मराठी साहित्य समीक्षक, दलित साहित्य की चेतना को थोड़ा देर से समझ पाये। जिन लोगों को दलितों के जीवन की व्यथा और पीड़ा के विषय में नहीं पता था, वे इस साहित्य का मूल्याकंन सही ढंग से नहीं कर पाये। यदि समीक्षक दलित जीवन की गहराई को नहीं जानते हैं, तो वे दलित साहित्य की समीक्षा निष्पक्ष होकर नहीं कर सकते। इसके लिए आवश्यक है कि वे दलित जीवन के अनुभव से निकलें। दलित साहित्य आंदोलन दलित मुक्ति आंदोलन की एक कड़ी है। इसी चेतना के आगे श्रृंखला में हैं–दलित पैंथर आंदोलन।

दलित साहित्य आंदोलन में 'दलित पैंथर' की भूमिका

दलितों पर अत्याचार तथा तिरस्कार का वातावरण आजादी के बाद भी वैसा ही रहा, जैसा आजादी से पहले था। अपनी हीनता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए ही 'दलित पैंथर' संग्राम की शुरुआत हुई। इस संगठन से अनेक दलित लेखक भी जुड़े हुए थे। बेरोजगार दलित युवावर्ग एक ओर तो समाज में जाति-शोषण झेल रहा था, दूसरी ओर उसकी गरीबी व साधनहीनता ने उसे परविहीन पक्षी की भावना से घेर रखा था। गाँवों तथा गहरों में शिक्षित दलित युवकों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती जा रही थी। अपनी जाति के साथ हो रहे अन्याय ने उन्हें झकझोर दिया था।

सामाजिक अन्याय, अत्याचारों के साथ 'रिपब्लिकन पार्टी' का कुछ न करना युवा मन को दुखी किए जा रहा था। इसी समय पर मुबंई के सिद्धार्थ कॉलेज के छात्रावासों में रहने वाले दलित व गैर-दलित युवकों ने मिलकर प्रयास किया, जिससे 'युवक आघाड़ी' की स्थापना की गई, जिसमें कुछ प्रमुख दलित युवा रचनाकार भी शामिल थे। इसमें दया पवार, अर्जुन डांगळे, नामदेव ढसाळ, जैसे रचनाकार सम्मिलित थे। ये सभी अमरीका के निग्रो साहित्य और निग्रो क्रांतिकारी आंदोलन से परिचित थे और उसी से प्रेरित होकर इन्होंने 9 जुलाई, सन 1972 को 'दलित पैंथर' की स्थापना की। 'दलित पैंथर' नामक इस समूह ने अपना विरोध दर्शाने के लिए स्वतंत्रता दिवस पर काले झंडे लेकर मुंबई में एक बड़ा प्रदर्शन किया था। प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो. मोईन शकीर ने 'दलित पैंथर' की उत्पत्ति का आधार दलित साहित्य को बताया है।

वर्ण-जाति-दास्य प्रथा के विरोध का इतिहास

समाज में ब्राह्मणवाद का बोलबाला था। ब्राह्मण को ईश्वर का दूत तथा शूद्र को तिरस्कृत बताया गया। इस वर्ण-व्यवस्था ने ब्राह्मण का जीवन तो हर प्रकार से सुरक्षित कर दिया, किंतु शूद्र के लिए समाज के सभी रास्तों पर प्रतिबंध लगा दिया। इस व्यवस्था का प्रभाव उत्पादन, व्यापार, वितरण तथा बाजार की प्रत्येक स्थिति पर था। ब्राह्मण वर्ग को समाज में बिना कुछ प्रयास करे सब-कुछ मिलता था, वह परजीवी की भांति जीवनभर बिना परिश्रम किए धन-संपत्ति, भूमि ग्रहण, सम्मान, सुख-सुविधाएं सभी प्राप्त करता था। क्षत्रियों को देश की रक्षा का कार्य सौंपा गया था। वैश्य वर्ण का कार्य संपूर्ण व्यापार क्षेत्र को संभालना था और तथाकथितत शूद्र को तीनों वर्णों की सेवा का कार्य सौंपा गया था। शूद्र को ज्ञान प्राप्त करने का, धन कमाने का तथा उत्पादन करने आदि का कोई अधिकार नहीं था। इस वर्ग के पास अपनी दशा को सुधारने का कोई मार्ग नहीं था। शूद्र जन्म से ही दासत्व लेकर पैदा होता था।

भारतीय समाज के ऐतिहासिक विकास में समाज से वर्ण-व्यवस्था को दूर करने के प्रयासों ने इसे कुछ समय तक ढीला अवश्य किया। ब्राह्मणवादी-असमतावादी-विषमतावादी संस्कृति का विरोध श्रमण संस्कृति की ओर से किया गया। इस परंपरा में मुख्य रूप से भौतिकवादी, चार्वाक, लोकायत तथा बौद्ध चिंतकों की भूमिका मुख्य रही। बुद्ध दर्शन ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था को शोषणकारी तथा उत्पीड़क बताकर इसका भरपूर विरोध किया। बुद्ध धर्म ने

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समतावादी विचार को महत्ता दी। उन्होंने समता, स्वाधीनता, न्याय तथा करुणा के जीवनदायी मूल्यों को स्थापित करके मनुष्य को सबसे ऊपर माना है।

बुद्ध धर्म अपने समतावादी विचार के कारण लगातार एक हजार वर्षों तक भारत व भारत के बाहर अनेक देशों में जीवंत रहा। बुद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्ध सरहपाद, निर्गुण संत कबीर, रैदास, चोखा और नामदेव के साहित्य में बहुजन हित का चिंतन देखा जा सकता है। वर्णश्रेष्ठता को अतार्किक, अवैज्ञानिक बताते हुए कबीर ने कहा है 'गर्भवास मंह कुल नहिं जाती। ब्रह्म बिंद ते सब उत्पाती।' इन सभी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में दलित वर्ण की वेदना को उतारा है तथा साथ ही इस बात पर जोर दिया है कि सभी ईश्वर के बंदे हैं और सब एक समान हैं।

सामाजिक संरचना में दलित कौन?

समाज में वर्ण-व्यवस्था के अनुसार एक विशिष्ट जाति के लोगों को अस्पृश्य माना गया, जिन्हें जजमानी की परंपरा के अनुसार गाँव की सफाई, मरे हुए जानवरों को उठाना, मृत्यु की खबर पहुँचाना, गाँव की रखवाली करने का कार्य जरूरी बताया गया। धर्मशास्त्रों ने इसे जन्म के साथ अछूत माना। अस्पृश्यों को शिक्षा ग्रहण करना, धन कमाना, उत्पादन के अधिकार आदि से दूर रखा गया तथा समाज में घृणित माने जाने वाले कार्य उन्हें करने को विवश किया गया। उनके पास अपनी अजीविका कमाने के लिए यह मुख्य कार्य थे। चूंकि इन्हें अछूत माना जाता था, इसलिए मंदिरों में प्रवेश, जलस्रोत को छूना आदि उन्हें निषेध थे। अछूतों को विशिष्ट आवाज निकालकर अपने आने की सूचना देनी होती थी।

पेशवाओं ने सरकारी फरमान जारी कर दिये थे कि उनके थूक से जमीन अपवित्र न हो, इसलिए गले में एक मटकी थूकने के लिए, उनके पदचिह्न मिटते जाएं, इसलिए कमर में झाड़ू तथा उनके आने की सूचना मिलती रहे, इसलिए डंडे में घुंघरू लगे रहें। इन नियमों का पालन न करने पर प्राणदंड तक की सजा दी जाती थी। इनके रहने का स्थान या बस्ती हमेशा गाँव की दक्षिण दिशा में होती थी। इनके पानी लेने का स्थान भी निश्चित होता था, जो नीचे की ओर होता था। इन्हें परिश्रम के बदले में सालाना कुछ सेर अनाज तथा रात में प्रत्येक सवर्ण घर से बेगारी के काम के बदले में केवल बासी रोटी दी जाती थी। आर्थिक आय के किसी अन्य साधन की अनुमति इन्हें नहीं थी और न ही अधिकार था। ये खेतों में भूमिहीन मजदूरों की भाँति दिन-रात काम करते थे और फसल की कटाई और अनाज की सफाई के बाद अनाज की ढेरी से इन्हें दूर रहने के आदेश थे। यदि उनकी छाया अनाज की ढेरी पर पड़ जाये, तो उसे अपवित्र माना जाता था। दलितों को केवल मिट्टी में मिला अनाज उठाने की छूट थी। समाज के समस्त उच्च वर्ग के लोग दलितों को परिश्रम के बदले में थोड़ा-सा अनाज देकर उन पर अहसान जताते थे कि तुम हमारे कारण गुजर-बसर कर पा रहे हो।

स्वपरख अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. दलित कविता के विकास के पीछे कौन-से मुख्य कारण रहे हैं?

उत्तर–*वर्षों की परतंत्रता के पश्चात भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की और अपने संविधान का निर्माण किया, किंतु भारत में एक वर्ग ऐसा भी था, जिसे अभी भी स्वतंत्रता नहीं मिल पाई थी। दलित वर्ग सदियों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, जो अंग्रेजी पराधीनता से भी अधिक भयानक थी। भारतीय समाज वर्ण-व्यवस्था में जकड़ा हुआ था, जिसमें चार वर्ण थे। सबसे उच्च वर्ण ब्राह्मण, उसके पश्चात क्षत्रिय, वैश्य और सबसे हीन व तुच्छ समझा जाने वाला वर्ग शूद्र वर्ण था। हर वर्ण के अपने कार्य भी निश्चित थे।*

एक वर्ण दूसरे वर्ण के कार्यों में कोई हस्तक्षेप नहीं करता था। शुद्र यानि अछूतों को समाज में कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे। उन्हें उच्च तीनों वर्ण की सेवा करनी होती थी। यहाँ तक कि शूद्र को पढ़ने का अधिकार भी नहीं था। धार्मिक स्थानों पर उनका प्रवेश वर्जित था। यह सदियों पुरानी प्रथा आज भी चली आ रही है।

भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात जब अपना संविधान बनाया गया, तो उसमें इस अमानवीय प्रथा के लिए भी प्रावधान है। दलित जाति सदियों से समाज में तिरस्कार सहती आ रही थी। उनमें समाज का विरोध करने की ताकत नहीं थी। कभी अपने अधिकारों के प्रति सजग होने का साहस भी उन्होंने नहीं किया। उनकी पीड़ा, वेदना, उनकी कुंठा को कुछ दलित कवियों ने अपनी कविता में उतार कर प्रस्तुत किया। दलितों को शिक्षा ग्रहण करने का भी कोई अधिकार नहीं था, इसीलिए दलित वर्ग अपने जीवन को अभिशाप मानकर जीता रहा। दलितों ने कभी स्वयं को ऊपर उठाने के प्रयास नहीं किये। किंतु डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा के महत्त्व को समझकर सन 1945 में मुंबई में पीपुल्स एज्युकेशन सोसाइटी की स्थापना की। इसके अंतर्गत ही इन्होंने मुंबई के सिद्धार्थ कॉलेज और औरंगाबाद के मिलिंद कॉलेज की भी स्थापना की।

डॉ. अंबेडकर एक समतावादी समाज का सपना देखते थे। उन्होंने दलितों को अपना जीवन सुधारने में बहुत सहायता की। उनके प्रयासों से 1956 में 'सिद्धार्थ साहित्य संघ' साहित्य संस्था की स्थापना हुई, जिसका नाम बाद में 'महाराष्ट्र दलित साहित्य संघ' रखा गया। दलित साहित्य में दलित जीवन की सारी व्यथा को उतारकर रखा गया, ताकि पढ़ने वाला उनके जीवन के दर्द को महसूस कर सके।

दलित साहित्य में सौंदर्य और मधुरता का कोई स्थान नहीं है, बल्कि वह कड़वाहट और कटुता से भरा है, जो उन्होंने अपने जीवन में सही है। दलित साहित्यकारों ने अपनी बेड़ियां तोड़ने के लिए तलवार नहीं, कलम का सहारा लिया और अपनी सारी कुंठा शब्दों के माध्यम से साहित्य में उतार दी। दलित साहित्य का जन्म एक विद्रोह के कारण हुआ, उस अमानवीय प्रथा के कारण हुआ, जो समाज में सदियों से चली आ रही है।

www.neerajbooks.com